युगुलानन्यशरण

मधुरमंजुमाला

इश्कस्वरूप

मंजु छन्द

इश्क रहस्य अथाह नाहप्रियचाह समेत बखानो।
जाके श्रवन मनन कीन्हे सियश्याम मिलत रसखानो।
याके परे अपर नाहीं कछु वेद पुरान पछानो।
युगलानन्यशरन सब तजि निज इश्ककथा उरझानो॥
शीशा शौक़ नौक़ का कातिल दारू दरद दिमागी है।
मेहर मुहब्बत मुरशिद महरम मधुर छकाया रागी है।
होश जोश अफ़सोस दूर नव नूरपूर अनुरागी है।
युगलानन्य आस की सांची हरदम दर दिल जागी है॥
जीवत ही लक्कर हो जावै सो शक्कर को खावेगा।
कोह मोह से टक्कर लेवै तब फक्करपद पावेगा।
जादू जाहिर चक्कर मक्कर छोड़ि स्वरूप समावेगा।
युगुलानन्य अनूप नामधुनि सुनि सुनाय सरसावेगा॥
तसबी फिरे नहीं कर डोलै बदन न बोले बानी।
शबोरोज़ महबूबयाद की माला मेहरनिशानी।
चाखे रस भाखे सपने नहिं नाम अमल मनमानी।
युगुलानन्य फकीरी मुश्किल कोइ विरले पहिचानी॥
चश्मचोट को ओट न करना लोटपोट हो जाना है।
लाजमोट को पटक शीश से इश्ककोट खुद खाना है।
खतरा ख़ौफ जुदा कर फौरन् नेहनिशान बजाना है।
युगलानन्य ख़बरदारी से सोवे मन मस्ताना है॥

सियवल्लभ से जाय हक़ीक़त कहो कोई अब मेरी।
मनिबिन फनि जलहीन मीन ज्यों दशा हमारी घेरी।
जो आवै दिलदार यार तो उपजै मोद घनेरी।
युगलानन्यशरन तेरे हित राह रैनदिन हेरी॥
सीतारामरूपआशिक अलबेले अधिक अदागी हैं।
भीताराम गहैं गरिमागुन सागर मगन सुभागी हैं।
जीता काम काल काहिलकुल काफ़िर रहित बिरागी हैं।
युगलानन्यशरन अंतर घट जरत विरह की आगी हैं॥
आशिक होना सहल नहीं मरने से मुश्किल मानोगे।
पलपल पर मरना जीना तिसको क्योंकर पहचानोगे।
चोज चमकातही न चले तहँ हाय हमेशे ठानोगे।
युगलानन्यशरन आशिकरस छानत छानत छानोगे॥
अपने अपने घर के भीतर अपनी गढ़े बड़ाई है।
नई नई बातें अविहित करि अर्थवाद बहकाई है।
जो कोई सन्देह करै तिस साथ जंग झमकाई है।
युगलानन्यशरन आशिक की दशा जुदी दरशाई है॥
सियवल्लभवर वपुष मिलन हित अद्भुत इश्क कलाई है।
मेहनत बिना मिलै मोहनमुद बेद नेति जेहि गाई है।
सांची बात न शक यामें कछु कथा पुरानन गाई है।
युगलानन्यशरन आशिक पर सियवरमेहर सदाई है॥
श्रीसियराम रंगीले रसनिधि रसिक सजाती सांचे।
जिनके अन्तर बाहरहूं निज नेह अजूब अयांचे॥
तिनके संग सजे भासे भल भाव चाव रस रांचे।
युगलानन्यशरन नेही आशिक मुदमंगल मांचे॥
मौन गौन गुन भांति शांति बिन जपी तपी सनमाने।
बचनबिरोध बोध बरजित कुल करत रोकिबो ठाने।
कठिन कष्ट हिय धारि गारि तन उपवासादि प्रमाने।
युगलानन्यशरन सत मत ते रहित निरंतर माने॥

नख सिख नवल माधुरी मनसिजमानमथन अवलोकैं।
मखमनहरन नाम अंतर उर रचत रहै अबिसोकैं।
चख चख गुनपीयूष महारस तकैं न काहू लोकैं।
युगुलानन्य परख प्रीतम प्रिय नेहनाज नव नोकैं॥
राजे रैन ऐन चितवन चख चलन ललन लखि लोयन।
छाजे छैल छलाव भाव चितचाव चढ़ाय सुकोयन।
गाजे गरक गभीर धीर गुन रमन करत खुशबोयन।
युगलानन्यशरन बाजे बर बीना बिशद बिलोयन॥
सुरमे सहित सलोने सुन्दर सुखमासर श्रीसरसें।
अनुपम अमल अमोल असल अनुराग बूंद बर बरसें।
ज्ञानी ग़रक गुमान मान मन मति गति बरबस करसें।
युगलानन्य नैन प्रीतम अति अदभुत लखि हिय हरसे॥
भली बुरी कोइ कोटि कहै पर अपने सुखमें उरझे हैं।
गली मिली संकेत कंजकल तहँ बसि फेर न सुरझे हैं।
कली अनूप खिली अन्दर उर तेहि सुवासि लहि मुरुझे हैं।
युगलानन्यशरन पल बिछुरत हो रहे पुरझे पुरझे हैं॥
नामध्यान अभिराम धरे उर अंकुर सतगुरबानी से।
व्यर्थ बाद कटु खेद तजे निर्वेद भजे अभिमानी से।
शान्ति नितान्त एकान्त बसे सियकान्तसनेह समानी से।
युगुलानन्यशरन घूमे नित अलखित दशा दिवानी से॥
बाहर विविधि बहारभार पर अंतर जिकरे-खुदाई है।
ऊपर मलिन समान सही पै भीतर सरस सफाई है।
राजा रंक न भेद गहे कछु समता साज सजाई है।
युगलानन्यशरन सोई सत सब बिधि मम सुखदाई है॥
यारी अवधबिहारी प्यारी खारी जाल जहानी है।
सारी सौक चित्त चौपर मधि खेलै लगन लगानी है।
हार जीत दोनों प्रीतमसंजोग बियोग कहानी है।
युगलानन्यशरन संतन की ऐसी सरस निशानी है॥

मन तन बचन रचन नागरगुन नाम रूप खिन खटके।
गुनगन रमन चमन चितवन सुचि सैर रंग में अटके॥
बन बन सज्जन खोजि घायल जित तित प्रीतमहित भटके।
युगलानन्यशरन आखिर अब बासी सरजूतटके॥
आशिक हो के कतल न होवे जीवे जीव जहाना।
तिसके सम कमज़रफ अधम नहिं संत अनंत बखाना।
सूर सदाना फेर डराना ममता में मगनाना।
युगलानन्यशरन हर दो दिशि मसि मुख माहूँ लगाना॥
आशिक को हर वक़्त मुनासिब ख़बर बेख़बर होना।
सनम शौक़ सुहबत ज़ाहिर में खूब जागना सोना।
अच्छी चीज मधुर दिलबर हित आप सुखी दुख ढोना।
युगलानन्य सनेह समुझ बिन वृथा जनम का खोना॥
मुझे पसन्द पंद एही जो सिर कटाय मर जाना।
हाय हौक हरदम बिरहानल करना जमा खजाना।
रैन ऐन जागना रोवना गम का भोजन खाना।
युगलानन्य लाल मिलने हित व्याकुल बीन बजाना॥
क्यों बेनाहक समझाते हो मुझे मरम तो जानो।
हम तो रोग सोग से संयुत बिरहवियोग पछानो।
जो अच्छे करनेकी ख़ाहिश तौ दिलबर को आनो।
युगलानन्यशरन सबही विधि अबतो असल दिवानो॥
आशिक नाम धराय खाय फिर खौफ, फजीहत तिसकी है।
हुवे बिना मनसूर नूर निज नेह न यार हिरस की है।
नाहक तरक किया लज्जत दुनियाँ की खूब हवस की है।
युगलानन्यशरन डूबे दरियाव इश्क गति किसकी है।
बात बनाना सूर कहाना खाहिश खाम ख़जाना है।
सर दर दस्त करे अव्वल तब मारू राग बजाना है।
जिस सायत रन सनमुख होना तब फिर क्या शरमाना है।
युगलानन्यशरन लाशक अब सिर कटाय मरजाना है॥

बधिर अंध पंगू गूंगे सम करत लगत नहिं देरी।
छन में रंक राव पल अन्तर बिरह हेत हिय हेरी।
अटपट चाल हाल महरम किस तरह हूजिये ये री।
युगलानन्यशरन कहिये क्या पड़ी प्रीत की बेरी॥
चितवन चलन चमक खेलन सरजूकिनार सुधि कीनी।
बोलन हसन लसन जुलफन छवि छोरन छैल छबीनी।
हरसायत दिल लाय ललकि पुनि सुरस हीन मति भीनी।
युगलानन्यशरन बिरहिन प्रिय प्रान निछावरि कीनी॥
मेहंदी मधुर मोहब्बत मनसिज मेहरबान मृदु ताजी है।
मान समान मानिनी महरम ललित लालसा राजी है।
रीत पुनीत मनोहर सोहर सरस स्वाद सत साजी है।
युगलानन्य कंज करतल लखि नेह सुनौबत बाजी है॥
गुफ़्तम् इश्क लपेटी बानी सानी सुधा सयानी।
शांत नैव मया किंचित् गुणसिंधुप्रवाह समानी।
हम तो टेक बिवेक छांड़ि सब तेरे करन बिकानी।
युगलानन्य नेह नैनन से निरखि हंसो दिलजानी॥
बातसल्यरस बादशाह सन्देह रहित गुनसागर।
शाहनशाह अथाह अनूपम रस भूपेश उजागर।
नेही नेहनहे नाजुक नित निरखे नागरि नागर।
युगलानन्यशरन सतमखसुख समुझत गुनिनिधि आगर।
बातसल्य रस पूजनीय प्रिय गुरुप्रभाव धिय ध्याई।
मौज महान सुजान अनत किमिकेलि कलित छवि छाई।
या मधि रंच विवाद देश अवकाश न नेह लखाई।
युगलानन्य अकथ उज्वल रस कहत गिरा शरमाई॥
क्या कोई करसकै हमारा प्यारा निकट निवासी है।
खालिक झलक खलक खारिज नहिं खिज़मत खैर खवासी है।
समुझा सरस शौक सोहबत सत समन फजीहत फांसी है।
युगलानन्यशरन सतगुरु की मेहर भाव भल भासी हैं॥

बिमल बिहार बाटिका बल्लभ भाव भान भल भा के हैं।
भाल भलाई भीत बिगत भव भारी भान न ताके हैं।
ख्वाहिश ख्वार खबर निज पर की फरामोश सद साके हैं
युगलानन्य रसीले रसनिधि अवधशहर के बांके हैं॥
मधुर मिजाज पसन्द फन्द दिल बिशद बराबर दीदम्।
उसी रोज से खोज और सब त्यागि चश्म चसपीदम।
परमानन्द प्रेम प्रीतमपद सुगन सुभाव शुनीदम।
युगलानन्यशरन रस सागर पाप न नेक तपीदम॥
दीदम् दर बाजार तमाशा सख़ुन बीच नहिं आता है।
गूनागून अजायब नक्शा सौदा शौक बिकाता है।
ख़रीदार सरदार सलोना सुन्दर रूप दिखाता है।
युगलानन्यशरन मुरशिद की मेहर पाय छवि भाता है॥
आशिक की समता करने लायक़ तिहुँ लोक न कोई है।
योगी जती तपी ज्ञानी तिसके आगे सब छोई है।
उनसे बड़ा और नाहीं जिनकी मति रंगरस भोई है।
युगलानन्य इश्क कीने बिन बार बार मति रोई है॥
आशिक असल उपासक खासे अभिलासे रसरासे हैं।
नाशक सकल विभूति विचारत अमल अनूपम आसे हैं।
हर हमेश आवेश बेस निज परख रूप अभ्यासे हैं।
युगलानन्यशरन के जीवन जाहिर जगत उदासे हैं॥
पल पल पीर प्यार प्रीतमपद प्रेमप्रवाह बहावै हैं।
जल थल मधुर मनोज मोहनीमूरति लखि हुलसावै हैं॥
अलबल बचन नहीं छलमल अति असल प्रमोद समावै हैं।
युगलानन्यशरन आशिक लाशक सिय श्याम सोहावै हैं॥
दिलदारों की दूरदरकदीं दुनिये से कुछ न्यारी है।
उसही में मशगूल भूल-हर लहजे रहैं बहारी है॥
बोलन हँसन मिलन तिसहीमय बाहर भान बिसारी है।
युगलानन्यशरन हम तो सोइ आशिक की बलिहारी है॥

नेह हिंडोरा डारा दर दिल पटरी प्रीति लगाई।
खंभा खाहिश मिलन मोहब्बत मरुवा खूब सजाई।
लट्टू रंगदार लय लालन डोरी जिकर जमाई।
युगलानन्य हमेशे झूलें सिया सहित सुखदाई॥
धूनी नेह जलाई हमने शबोरोज दिल अन्दर।
आतश आह हमेशे निकसे जले जिसम मनमन्दर॥
याद यार का हर दम माला फिरे कहर के कन्दर।
युगलानन्य नजर में मेरे आता नहीं सिकन्दर॥
भीनी निसा अंधेरी घेरी बीम मौज दरसावै।
लहर कहरमय उठे अनूठे देखत जिय डरपावै।
पार यार दिलदार सलोना मुशकिल मिलन मनावै।
युगलानन्यशरन इह मारग सुबुकसार कहँ पावै॥
हरदम ख्याल खौफ नहिं खतरा खबरदार खिदमत में।
खातिर खाह हजूरी हजरत ख़ाहिश नहिं अज़मत में॥
ख़ालिक ख़लक एक सा मुझको मालुम शुद इस मत में।
युगलानन्य क़लम क़ायम बर लिख पाया क़िसमत में॥
बन्दा खूब अजूब वही है जिसे बन्दगी प्यारी।
जिकर जाहरी सकल गुजारी जिसम गंदगी भारी॥
नजर शाम और सहर बहरदरयाय इश्क छबिधारी।
युगलानन्यशरन साबित दिल पावत प्रीतम प्यारो॥
राह अजब बारीक बाल से सौगुन नज़र न आवै।
हर यक तरफ़ बरफ़ के मानिंद सीरी हवा बहावै।
रंगदार संगी नहिं दीगर तिमिरतोम दृग छावै।
युगलानन्यशरन मुरशिद की मेहर सहित सुख पावै॥
जागत रहो गहो डोरी छबि सूरति सजन सनेही का।
पागत महो मोद माखन मधु मृदु तन गुन गन गेही का।
लागत लाह लहो लोचन फल दशा विचित्र विदेही का।
युगलानन्यशरन सदगुरुपद आशिक हो डर केही का॥

दिन अरु रात सैन कीजे रस पीजे प्रेम पियाले का।
छिन छिन तात नेह नूरी तहक़ीक करो छबिवाले का।
रित तीनों तमतार पार दृग दरसै सुख मतवाले का।
युगलानन्यशरन बेशक अब नजदीकी नृपलाले का॥
जे सतपंथ पाव धारे तिनको बहुविधि बहकाते हैं।
ज्ञान ग़रूर मजूर ज़हर प्याला पीये मदमाते हैं।
दुर्लभदेह पाय मानव शठ अहंप्रवाह बहाते हैं।
युगलानन्य नामअनुरागिन तरफ़ ताकि खुनसाते हैं॥
करमकीच के बीच धसे मुख से बिज्ञान बताते हैं।
वाचकव्यर्थ बाद बादी नहिं लक्ष लाभ लखिपाते हैं।
राम अनादि अखिलईशनपति प्रीति रहित बिललाते हैं।
युगलानन्यशरन इह भवनिधि फिरि फिरि आते जाते हैं॥
जाके रंग रूप रेखा नहिं कहि पुनि तहँ अरुझाते हैं।
अलख कहत कहु काहि लखत शठ अहमक़ जन्म नसाते हैं।
इनकी कौन कथा कहिये चुप रहिये प्रान पिराते हैं।
युगलानन्यशरन निज सुख लहि फूले नहीं समाते हैं॥
रसिक पारखी प्रेमदिवाना सियवल्लभछबिभीना है।
चित्त चारु चामीकर भीतर जड़ित सनेहनगीना है।
पल पल प्यास पास परसन की क़ीमत अजब नवीना है।
युगलानन्य दशा ऐसी बिन ज्यों नकटों का जीना है॥
गली भली छबिमिली रली रस तहां सदा हम बसते हैं।
मन नवनेहसरोवर मधि नित गरक न कभी निकसते हैं।
नाम अमोल अतोल दाम अभिराम धारि दिल लसते हैं।
युगलानन्य ज्ञान योगादिकगुंजपुंज लखि हँसते हैं॥
दरजा दूर इश्कबाजों का कहन सुनन से न्यारा है।
महबूबों दी मेहर न मांगे क़हर महामुद धारा है।
आप खाक में मिले मौज से दिलजानी दिलदारा है।
युगलानन्य एक टक हरदम नेही नज़र निज़ारा है॥

मुझे किया बदनाम दीन दुनियें में अजब तमाशा है।
खुशी करैंदा आप महल में देंदा नहीं दिलासा है।
जो कबहीं अर्जी गर्जी है लिखो जवाब न आसा है।
युगलानन्य याद में तेरे पानी बीच बतासा है॥
देखा आज रसीला गबरू अबरू खैंच कमाना।
सरजूसरितकिनारे प्यारे करैं कहर कतलाना।
संगी नवरंगी अलबेले सखा सजे धनुबाना।
युगलानन्य यार छबि ऊपर किया काम कुरबाना॥
अंक अशंक सु नव आशिक मनहरन श्रवन सुनलीजे।
आह सर्द तन जर्द नैन नित नीर पीर सें भीजे।
मधुर खल्पतर बचन उचारन अशन सु दूजे तीजे।
युगलानन्यशरन सीतावर तिनपर अधिक पसीजे॥
चितवन सांग चलाय यार मन् तन मन छेद दिया है।
टाँका लगै न सीने माफ़िक ऐसा दरद किया है।
अगर हकीम मसीहा आवैं तो भी भीत हिया है।
युगलानन्यशरन सुन्दर मुसक्यान बिलोकि जिया है॥
योगी योगरोग में माते प्रानायाम समाधी।
हांसिल एक बराट न यामें केवल बाट बिआधी।
ज्ञानी ज्ञान कथैं निसि बासर मत अद्वैत दृढ़ साधी।
युगलानन्यशरन श्रम भ्रम बिन मारग नेह अनाधी॥
इश्क फकीरी अमल अमीरी दमरी सेर नहीं है।
कोह मोह की बेरी पहिरे सूरति फिरति वही है।
मन महबूब मिलाय न पल भर खाते दुध दही है।
युगलानन्यशरन बातों से किसने लाल लही है॥

इति

PRINTED BY GANESH PRASAD AT THE RAJPALI PRESS, ALLAHABAD—X-1924.